दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर–273001
(नैक प्रत्यायित)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
फैक्स नं0 0551–2334549
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 10.01.2021

समाचार स्वरुप प्रकाशनार्थ

दिनांक 10.01.2021 को महाविद्यालय में **उ.प्र.हिन्दी संस्थान लखनऊ तथा दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित "आचार्य भगवती प्रसाद सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व"** पर आयोजित **दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी** के तृतीय सत्र में विशिष्ट वक्ता डॉ. कन्हैया सिंह ने **राम भक्ति काव्य परंपरा, अनुसंधान और चिंतन** विषय पर बोलते हुए कहा कि डॉ. भगवती प्रसाद सिंह ने अपने पूर्वज बनादास के चौसठ रचनाओं का संकलन कर उन पर अपना शोध कार्य किया। इसके अतिरिक्त इन्होने भूसून्डि रामायण और दिग्विजयय भूषण का सम्पादन किया, जिसे भारतीय विद्वान के साथ–साथ पाश्चात्य विचारकों ने भी सराहा, ये सभी रसिक परम्परा के ग्रंथ है जिनमें ऋंगार भक्ति की प्रमुखता है। इन्होने यह भी कहा कि यदि दुर्लभ बनादास पर डॉ. सिंह शोधकार्य नहीं करते तो इन्हे कोई जानता नहीं इसलिए यह हिन्दी साहित्य की एक अनुपम कड़ी सिद्ध हुआ। उन्होने कहा कि इनका पूरा जीवन साधक के समान था जिन्होने साहित्य साधना में उसे तपा दिया।

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए **डॉ. रामदेव शुक्ल** ने कहा कि शोध का अर्थ यह नहीं है कि यह पूर्ण हो गया बल्कि इसे आगे भी बढ़ाना आवश्यक है। इन्होने संतो और भक्तों का उल्लेख करते हुए कहा कि मध्यकालीन साहित्य को बनाने और बिगाड़ने में इनका बहुत बड़ा योगदान है। इन्होने अनन्तदास एवं नाभादास जैसे भक्तों का उल्लेख करते हुए कहा कि इनके साहित्य, भारतीय इतिहास में अमर हो गयें। तुलसीदास ने मानसरोवर की यात्रा करके काशी में रामरचित मानस की रचना की और संत एवं आध्यात्मिक चेतना को डॉ. सिंह ने आगे बढ़ाया। इन्होने कहा कि राम भक्ति से मेरा सम्बन्ध चंदन और पानी के जैसा है लेकिन यह कबका है यह ज्ञात नहीं। अवधि को उसकी जड़ से पकड़ते थे और यह कहते थे कि शब्दों के संदर्भ से शोध का निर्धारण होना चाहिए।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए डॉ. के.सी. लाल ने कहा कि तुलसीदास ने रामचरित मानस को पढने के लिए एक शर्त लगा दी है। कहा है कि यदि संतो का साथ न किया, यदि श्रद्धा और आस्था का भाव नहीं रहा और यदि राम आपके प्रिय नहीं हों तो रामचरित मानस आपके लिए नहीं है। डॉ. सिंह का पूरा साहित्य आस्था और श्रद्धा से भरा है। इनका मानना था जो साहित्य में डूब जाते हैं वहीं इसके मूल तत्व को प्राप्त करते हैं। राम भक्ति के रसिक सम्प्रदास पर बोलते तो

सभी हैं पर इस सम्प्रदास का गहन अध्ययन नहीं करते है। डॉ. सिंह, डॉ. राम चन्द्र शुक्ल के आस्थावान शिष्य थे लेकिन उनके विचारों के विरूद्ध होते हुए भी रामभक्ति के रसिक सम्प्रदाय पर शोध किया और कहा कि गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना कर उसे विश्वविख्यात महाकाव्य बना दिया। इन्होने यह भी कहा कि राम ने अपने जीवन काल में निन्यानबे लिला की, लेकिन रासलिला के लिए उन्हे द्वापर में कृष्ण का अवतार लेना पड़ा। साथ ही इन्होने कहा कि तथ्यानुसंधान होना चाहिए। श्रृंगार मनुष्य के जीवन को पूर्णता प्रदान करता है।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन करते हुए डॉ. उदय प्रताप सिंह ने कहा कि डॉ. सिंह का पूरा जीवन राममय था। लेकिन इन्होने ने यह भी कहा कि भारत के सभी देवी–देवताओं का अस्सित्व उत्तर भारत में हुआ। लेकिन रामभक्ति दक्षिण से यलवार संतो से उत्तर में आयी। ये सभी मस्त होकर भक्ति गीत गाते थे। इन्होने कहा कि राघवानन्दचार्य, रामानन्दचार्य की परम्परा ने तेरहवी–चौदहवी शती में काशी में योग और भक्ति की परम्परा का प्रचलन किया। इन्होने बताया की प्रेम भक्ति का सबसे बड़ा आधार है और मधुरोपासना ही रसिक पम्परा के मूल में है।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ. सिंह के कृतित्व और व्यक्तित्व पर शोध करने वाली प्रथम छात्रा डॉ. चारूशिला सिंह ने कहा कि इस विषय पर शोध करने पर मुझे यही ज्ञात हुआ कि डॉ. सिंह के जीवन में राम हर क्षण, हर पल रहे, अयोध्या धाम से उनकी अटूट आस्था थी। संतो से इनका सर्वाधिक लगाव था और उनका यह भी मानना था कि यदि ईश्वर की भक्ति पाना है तो उनके भक्तों के अनुसार आचरण करियें। डॉ. सिंह शोध के पर्याय थे, उनमें राम के प्रति आस्था का उन्मेष था। इनकी रचनाओं में इतिहास संस्कृति, भक्ति और आध्यात्म सभी तत्वों का समावेश था। इनका पूरा जीवन प्रेरणादायी है और स्मृतियों में भी प्रेरणा देते रहेंगे। सत्र का संचालन डॉ. नित्यानन्द श्रीवास्तव ने किया।

संगोष्ठी के समापन समारोह जिसका मूल विषय था **अनुसंधान शोध और सृजन** विषय पर विशिष्ट वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय ने कहा कि डॉ. सिंह बहुत बड़े सम्पादक और शोधकर्ता थे लेकिन एक सृजनकर्ता नहीं थे। उन्नीसवीं शदी में वे स्वयं बनादास बन अपना उद्धार करने आये थे और उन्ही की ग्रंथो की खोज कर अपना शोध कार्य किया और उन्होने कविराज गोपीनाथ तथा हनुमान प्रसाद पोद्धार की जीवनी लिखी और मनीषी की लोकयात्रा इनके जीवन की अक्षय कृति बन गयी।

विशिष्ट वक्ता के रूप में बोलते हुए **डॉ. अनन्त मिश्र** ने कहा कि भक्ति में भक्त को मिलता क्या है, रसिक सम्प्रदाय आवश्यक क्यों है, शीर्ष भक्ति क्या है, उन्होने कहा जैसे गोपियॉ, कृष्ण को चाहती हैं वही भक्ति की पराकाष्ठा है। भगवान की प्राप्ति केवल भक्त ही कर सकता है। भक्त ही

राम और जीव को शिव बना सकता है और एक समय ऐसा आता है कि वह देवत्व को प्राप्त कर लेता है।

मुख्य अतिथि **डॉ. के.सी. लाल** ने कहा कि रसिक शब्द का सामान्य अर्थ नहीं है। जहॉ रसिक डूब जाते हैं वही आनन्द तत्व की प्राप्ति होती है। इस देवत्व को पाने के लिए कई कठिन रास्तों से गुजरना होता है। माधुर्य से रहित जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। यही मनुष्य की चरम इच्छा होती है। **अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ. सदानन्द गुप्त** ने कहा कि इस दो दिवसीय संगोष्ठी में अतिथियों ने बड़े आत्मीय भाव से विगलित होकर डॉ. सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को सराहा और निश्चित रूप से डॉ. सिंह का व्यक्तिव इतना विराट था कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक पाथेय सिद्ध होगा।

आभार ज्ञापन व संगोष्ठी के समाकलन को डॉ. राजशरण शाही ने किया और संचालन का कार्य प्रत्युष दूबे ने किया। इस संगोष्ठी में मुख्य रूप से डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय ने किया। संगोष्ठी में हिन्दी विभाग के डॉ. नित्यानन्द श्रीवास्तव, डॉ. विभा सिंह, श्री भगवान सिंह, डॉ. राकेश कुमार तथा अधिकाधिक संख्या में प्रतिभागी व छात्र/छात्रायें उपस्थित थे।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी, सूचना जनसम्पर्क